

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 98	Year 11	Volume 05	March 2021 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150
------------------	----------	---------	-----------	-----------------------	---------	---

मृत्यु एक अमृत

दो दिन का दुनिया का मेला रहेगा,
कायम यह जग में ढमेला रहेगा,
लोग भी चलेंगे एमणान तक,
बेटा भी हक निभायेगा अग्निदान तक।

आखिर की दो पक्तियां कोविड महामारी से पहले तक तो सत्य थी पर अब सत्य नहीं रही। मृतक शमशान तक पहुंच जाये यही बहुत है। हजारों मृतक शरीर नदियों में डाल दिये गये क्योंकि शमशान भूमियों में टोकन व्यवस्था हो गई थी और अग्निदान भी इंतजार के बाद दूसरे जीसरे दिन हो रहा था।

जिन्दगी भर हम भाग दौड़ कर जो कुछ एकत्र करते हैं, मृत्यु उसे बिखेर देती है। जिसे कभी हम किसी को भी देना नहीं चाहते थे वह सब मृत्यु हम से छुड़वा देती है। परमात्मा जब



Contact:

BHARTENDU SOOD

Editor, Publisher & Printer

231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

षरीर से आत्मा रूपी करंट को खींच लेता है, तब इस में कुछ भी नहीं बचता। कुछ समय बाद ही षरीर से दुर्गन्ध आने लगती हैं। यह लोक प्रचलित धारण है कि “ मृत्यु के समय यमदूत जीव को लेने आते हैं। जब षरीर से प्राण निकलते हैं तब भयंकर पीड़ा होती है। जीवन और जगत में अन्धविश्वास और अज्ञान होने के कारण अनेक मिथ्या बातें प्रचलित हो गई हैं। सच यह है कि यम नाम वायु का है। षरीर में आठ चक्र तथा नौ द्वार हैं। षरीर में वायु के सहारे जीव प्रवेश करता है और वायु के सहारे ही षरीर से निकलता है। वैज्ञानिकों ने प्रयोग के लिये मरते समय व्यक्ति के षरीर को कांच के बक्से में रखा, जिससे जान सकें कि षरीर से प्राण किस रास्ते और कब निकल रहें हैं, किन्तु सभी प्रयोग असफल रहे। आज तक इस रहस्य को कोई नहीं समझ सका। यह रहस्य प्रभु के अधीन ही है। कुछ नियम ब बातें परमात्मा ने अपने अधीन ही रखी है। इस का सब से बड़ा अनुभव हमें इस कोविड के दौरान हुआ। बड़े बड़े से डाक्टर भी मरीज को बचाने में असफल हो गये। दो तीन साल पहले जब कि डाक्टर यह दावा कर रहे थे कि वह कृत्रिम विधि से जीवन ला सकते हैं, कोविड की आपदा ने उन्हें सह सबक दे दिया कि कुछ नियम ब बातें परमात्मा ने अपने अधीन ही रखी है।

किसी को यह मालुम नहीं है कि आत्मा षरीर को छोड़ने के बाद कहां और किस योनि में जाती है। यह प्रभु की अदभुत व्यवस्था है। षरीर छोड़ने के साथ ही मृत्यु जीव की सारी स्मृतियों को भुला देती है। नहीं तो संसार में नित्य नई समस्याएं और झगड़े बने रहते और पूरी सृष्टि— व्यवस्था तथा कर्मफल में व्यवधान होता। जीव तब अपनी धन— दौलत, प्यार सम्पदा आदि पाने के लिये कोर्ट कचहरी दौड़ता, लड़ता और अव्यवस्था फैलाता।

मृत्यु परमात्मा का विलक्षण चमत्कारी परिवर्तन है। यदि मृत्यु न होती तो घरती नरक बन जाती और यह दुनिया रहने लायक नहीं रहती। मृत्यु ने जीवन को सार्थक बना दिया है। कल्पना करो यदि मृत्यु न होती तो यह संसार या हमारे परिवार कैसे होते। बुढ़े, रोगी और असहाय व्यक्तियों की भरमार होती। मनुश्य जीवन से तंग, दुखी और परेषान हो जाता और जीवन नीरस और व्यर्थ लगता। संसार का संतुलन बिगड़ जाता, षायद खाने को अनाज न होता और सांस लेने के लिये हवा और पीने के लिये जल न मिलता।

यदि मरने का भय और अच्छे कर्मों द्वारा अगले जन्म में मानव चोले की इच्छा न हो तो मानव धर्म, कर्म, सत्संग, साधना, भक्ति, मन्दिर, तीर्थ आदि सब को भूल जाता। मनुश्य बहुत अहंकारी और अत्याचारी हो जाता, संसार के नियम, व्यवस्था, अनुषासन आदि सब फेल हो जाते। परमात्मा द्वारा बुरे कर्म के बुरे फल के भय की कोई आवष्यकता न रहती। जीवन और जगत दोनो बोज़ बन जाते। सच पूछो तो मृत्यु ने जीवन का मूल्य बना दिया है। मृत्यु के बिना जीवन का मूल्य कुछ नहीं रहता। इसीलिये मृत्यु को अमृत कहा गया है। मृत्यु सच्ची मित्र है। हमें सदा नई आषाएँ एवं अवसर प्रदान करती हैं। मृत्यु जरा जीर्ण, पुराना, बूढ़ा, व्याधीग्रसत, कटा— फटा, सला गड़ा षरीर लेकर, षिषु के रूप में सुन्दर, आकर्शक, भोलाभाला और नया षरीर दे देती है, जिसे सभी देखना, चूमना, उठाना और मिलना चाहते हैं। इतना बड़ा परिवर्तन संसार की और कोई षक्ति नहीं करती। ज्ञानी व्यक्ति के लिये मृत्यु सुखद और अज्ञानी के लिये दुखद होती है।

जो मृत्यु के सत्यस्वरूप को समझ और लेते हैं वे कभी मृत्यु से चिन्तित और भयभीत नहीं होते। हम केवल भौतिक षरीर को ही सब कुछ समझते हैं, जो कि नष्वर है। इसलिये मृत्यु दुखद तथा भयभीत करती है। वास्तव में हम आत्मा हैं। क्षरीर तो हमारा साधन है। जब पुराना वस्त्र घिस जाता और फटने लगता है तब हम उसे बदल देते हैं। ऐसे ही जब पुराना षरीर सथ नहीं देता, तब आत्मा उसे बदल लेती है। यही मृत्यु है।

डा महेश विद्यालंकार



जो काम हम अकेले में करते हैं, वही हमारे चरित्र को दर्शाते हैं

एक बार एक बढ़ई व उसका बेटा किसी मकान की दीवार को चुन रहे थे। शाम होने वाली थी व उनका काम से निवृत्त होकर घर जाने का समय आ रहा था। जैसे ही बुनियाद के आखरी कुछ पत्थर रखने का समय आया सिमेन्ट और रेत का मसाला खत्म हो गया। पिता ने पुत्र से कहा कि वह मसाला तैयार करे। बेटे ने कहा—पिता जी नया मसाला बनाने की आवश्यकता नहीं जो दीवार पर मसाला लगाया है, उसी को ईकठठा कर काम चला ले ते है। पिता ने कहा—बेटा, परन्तु दीवार कच्ची रह जायेगी। बेटे ने कहा—पिता जी किसी को कुछ पता नहीं लगेगा। बढ़ई कुछ सोच कर बोला—बेटा, दो व्यक्तियों को इस बात का सदैव पता रहेगा, एक तुम और दूसरा मैं और यह बात जीवन भर हमें धिक्कारते रहेगी। इसलिये जाईये ताजा मसाला बना कर लायें। यही चरित्र है।

शिमला का **SHARDA**

कामधेनु जल

**गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि**

एक बोतल कई महीनों चले। फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Office : H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh-16004

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप बैंक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-
 Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
 Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
 Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का बैंक भेज दे।

या **Google Pay No. 9217970381** या **Paytm No. 8968038189**

दुख से कैसे निपटे

भारतेंदुसूद

कहते हैं जब तक प्राण है दुख और सुख आते रहेंगे। वैरागी, संत महात्माओं की बात छोड़ दी जाये तो दुख के बिना कोई भी व्यक्ति नहीं चाहे वह राजा है या फिर कोई दरिद्र। दुख का सीधा सम्बन्ध ईच्छाओं, मोह व भय व जिसे हम अपना समझते हैं उसे खोने से है। यदि किसी चीज को अपना समझेंगे ही नहीं तो न तो उसे खोने का डर रहेगा और जब वह चली जायेगी तो जाने का दुख भी नहीं होगा—जिसे वैराग्य भी कहा गया है परन्तु वास्तविकता यह है कि इस संसार में रहते हुये व्यक्ति भौतिक चीजों जिस में नाम, सम्मान, वैभव, प्रतिष्ठा भी आ जाते हैं, को पाने का संघर्ष करता है, उसकी सफलता का मापदण्ड भी भौतिक संग्रह ही माने जाते हैं, ऐसे में उन सभी भौतिक वस्तुओं के साथ उस को मोह हो जाता है और अगर वे हाथ से निकल जाये तो स्वभाविक तौर पर उसे दुख होता है।



हमने अक्सर देखा होगा कि खोने का दुख सभी को एक जैसा नहीं होता। उदाहरण के लिये किसी का जीवन साथी उसे छोड़ जाये तो कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो जीवन भर दुख से बाहर नहीं निकल पाते और बहुत से ऐसे भी होते हैं, जो कुछ दिनों या महीनो बाद ही अपनी दैनिक दिनचर्या में लौट आते हैं। यह नहीं कि उनको दुख नहीं होता, होता है, परन्तु दुख से निपटने का उनके पास ढंग होता है। मेरे अनुसार जो व्यक्ति दुख से उभरना जानता है उसका जीवन उस व्यक्ति से कहीं अच्छा होता है जो कि दुख को अपने उपर हावी होने देता है।

वेद और गीता में लिखी दो बातें दुख से निपटने में बहुत सहायक हो सकती हैं। पहली— ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य सिवद्धनम् ॥

जो कुछ दिख रहा जगत में,
सब ईश का है और सब मे ईश समाया है,
त्याग भाव से जीवन जीना,
यह ढलती फिरती छाया है,
मोह माया के वशीभूत,
क्यों करता मेरा मेरा है,

भूल गया यह जगत बावरे,
चिड़िया रैन बसेरा है,
अति लोभ में कभी न फंसना,
ऋषियों ने फरमाया है,
किसके साथ गई बोलो,
नश्वर माया और काया है।

मनुष्य की बुद्धिमत्ता इसी में है कि वह यह मानकर चले कि व्यक्ति के पास जो भी है उसका असली स्वामी वह ईश्वर ही है। ईश्वर ने यह सब पदार्थ मनुष्य को त्यागमय ढंग से भोगने के लिये दिये। यदि मनुष्य स्वयं को इन सब का स्वामी समझने लगेगा तो अवश्यमेव उसे इनके चले जाने पर दुख होगा। परन्तु यदि वह यह समझेगा कि ईश्वर ने मुझे भोगने के लिये दी थी और उचित समय आने पर उस ईश्वर ने वापिस ले ली है, इस में मेरा कुछ नहीं गया तो उसे दुख कम होगा। यहां एक और बात जिस पर की जोर दिया गया है वह है कि त्यागमय ढंग से भोगना। मान लो मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक धन है, एक सोच तो यह है कि इसे मैं अपने ही प्रयोग में कैसे लाऊं चाहे मुझे अनावश्यक वस्तुओं पर खर्च करना पड़े, दूसरी सोच यह है कि इस धन से मेरे अतिरिक्त दूसरों का भी कल्याण हो, यही त्यागमय ढंग से भोगना है। ऐसे व्यक्ति को धन के चले जाने का दुख नहीं होता।

दूसरा जैसा कि गीता में कहा है कि शरीर को निष्काम सेवा में अर्पित करें, स्वयं को परमात्मा में समर्पित कर दें जिस से कि आपकी आत्मा संसार के रचईता परमात्मा से ही संदेश लेकर आप को उपयुक्त रास्ते में रखे।

वर्तमान असहिष्णुता के दौर में अधिक प्रासंगिक हो गया है स्याद्वाद

सीताराम गुप्ता

यह मात्र संयोग नहीं हो सकता कि आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक ही युग में महावीर, बुद्ध और कन्फ्यूशियस जैसे युग प्रवर्तक महापुरुष एक साथ ही विश्व फलक पर उभरे जिन्होंने अपने विचारों द्वारा पूरे विश्व में एक क्रांति सी ला दी। संभवतः समय की ज़रूरत ने ही महावीर, बुद्ध अथवा कन्फ्यूशियस को युग प्रवर्तक महापुरुष बना दिया। ये वो समय था जब धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड तथा आडम्बर, पशुबलि के रूप में हिंसा व वैचारिक जड़ता के रूप में असहिष्णुता अपने चरम पर पहुँच चुकी थी। भारतभूमि पर महावीर और बुद्ध दोनों ने ही इन बुराइयों को समझा। उन्होंने हिंसा व असहिष्णुता आदि दुर्गुणों से मुक्ति के लिए चित्त की निर्मलता पर बल दिया। आज विश्व के अनेक भागों में जो वैचारिक जड़ता व उसके फलस्वरूप जो असहिष्णुता व्याप्त है ऐसे में महावीर स्वामी के जीवन व उनकी शिक्षाओं को जान-समझकर उन्हें आत्मसात करना अनिवार्य प्रतीत होता है।

महावीर स्वामी का बचपन का नाम था वर्द्धमान। वे राजकुमार वर्द्धमान से महावीर कैसे बने? कहा जाता है कि उन्होंने एक भयानक सिंह को काबू में करने के बाद ये उपाधि प्राप्त की थी। वास्तव में इंद्रियों को वश में करने वाला सबसे बड़ा योद्धा है। यही किया था राजकुमार वर्द्धमान ने और महावीर की उपाधि प्राप्त की थी। आज हम बात-बात पर आपे से बाहर हो जाते हैं। सिर्फ अपना पक्ष देखते हैं अपनी विचारधारा के पूर्वाग्रही हैं। जैन धर्म में एक सिद्धांत या तत्त्व है स्याद्वाद जिसका सामान्य-सा अर्थ है हो सकता है या संभव है। इसमें किसी की किसी भी प्रकार की विचारधारा का खंडन नहीं किया जाता चाहे वह हमारी विचारधारा से कितनी भी अलग या विपरीत क्यों न हो। मान लीजिए हम पूर्णतः शाकाहारी हैं और कोई ये कहे कि मांस खाना अच्छी बात है तो भी हम तत्क्षण उसकी बात का विरोध अथवा खंडन करने की बजाय मात्र ये कह दें कि भाई हो सकता मांस खाना अच्छी बात हो लेकिन मैं तो पूर्णतः शाकाहारी हूँ।



यदि हम ऐसा कह देते हैं तो इसका ये अर्थ कदापि नहीं कि इससे हमारे लिए मांसाहार करना अनिवार्य हो जाएगा लेकिन इसका सबसे बड़ा लाभ ये होगा कि इससे कोई विवाद उत्पन्न नहीं होगा और हम किसी भी प्रकार के टकराव से बचे रहेंगे। कई बार हमें वास्तविकता का पता भी नहीं होता और हम निरर्थक विवाद में उलझ जाते हैं। आज प्रायः अधिकांश डॉक्टर मांसाहार व अंडे लेने पर बल देते हैं। हम यदि शुद्ध शाकाहारी हैं तो डॉक्टर के कहने के बावजूद मांसाहार नहीं करते लेकिन डॉक्टर का विरोध भी नहीं करते। जीवन में अन्यत्र भी हम ऐसा कर सकते हैं लेकिन नहीं करते। हम ऐसी बातों को लेकर भी उलझ पड़ते हैं जिनकी वास्तविकता से भी हम परिचित नहीं होते। अपने सिद्धांतों पर अटल रहना अच्छी बात है लेकिन दूसरों के सिद्धांतों को समझने का प्रयास करने में भी कोई दोष नहीं है। दूसरों की विचारधारा जानने-समझने के

प्रयास में संभव है उसमें हमारे लिए भी कोई उपयोगी सूत्र निकल आए। लेकिन यदि हम दूसरों के विचारों को सुनेंगे ही नहीं तो कुछ नया उपयोगी सीखना और जीवन में लागू करना भी असंभव होगा।

आज के समय की सबसे बड़ी समस्या यही है कि हम दूसरों की विचारधारा को महत्त्व नहीं देते जिससे उसे धैर्यपूर्वक सुनना भी संभव नहीं होता। वास्तव में ये जितना सरल लगता है उतना सरल है भी नहीं। दूसरों की विचारधारा को धैर्यपूर्वक सुनना व उसे महत्त्व देना बड़ा मुश्किल काम है और इस मुश्किल काम को कोई बहादुर व्यक्ति ही कर सकता है। यही सबसे बड़ी वीरता है। जिसने दूसरे के विचारों को महत्त्व देना सीख लिया उसने अहिंसा का पाठ भी सीख लिया। मैत्री का सबक भी याद कर लिया। मन की सकारात्मक वृत्ति द्वारा हम संसार रूपी युद्ध और बाहरी षत्रुओं को स्थायी रूप से जीत कर निर्द्वन्द्व जीवन व्यतीत कर सकते हैं। यही सुखी और सफल जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण व उपयोगी सूत्र है। महावीर स्वामी ने इस जीवन सूत्र को पुष्टि प्रदान की। स्वतंत्रता, आत्मज्ञान, आत्मनियंत्रण, नम्रता और क्षमाशीलता ही वीरता के लक्षण हैं बाहुबल नहीं। जो हिंस्र पशु का वध करने की अपेक्षा उसको पालतू बना कर उसे हिंसा से विरत कर सके वही वास्तविक बाहुबली है।

महावीर स्वामी कहते हैं कि अपने अंदर व्याप्त सभी प्रकार के विकारों से मुक्त हो जाओ। अपने नकारात्मक भावों को दूर करो। अपने अंदर की नकारात्मकता को परास्त करो। युद्ध ही करना है तो भौतिक स्तर पर नहीं अपितु मानसिक स्तर पर करो। युद्ध ही करना है तो अपने मन की भावभूमि पर करो। अपने मन की संकीर्णता और नकारात्मकता पर चोट करो। यही वास्तविक युद्ध है। जिसने ऐसा युद्ध करना सीख लिया वही सबसे बड़ा योद्धा है। यही संदेश है महावीर स्वामी का। जिसने अपने नकारात्मक भावों, घृणा, द्वेष, अलगाव, क्रोध, अहंकार आदि को देखकर उन पर प्रहार करने की क्षमता उत्पन्न कर ली है वही है आज का वास्तविक महावीर। इस महावीर जयंती पर हम कम से कम दूसरों की विचारधारा का आदर करने का संकल्प अवश्य लें। इसी में निहित है महावीर जयंती मनाने की प्रासंगिकता।

Knowledge

Knowledge is an inner treasure. It is imperceptible to a thief; it provides enduring happiness; it grows ceaselessly while being imparted to earnest disciples, and it is not destroyed even with the passing of an era. O kings, give up your pride in the presence of those who have this treasure; who indeed can compete with them?

Bhartrihari

MIT neuroscientist Earl Miller notes that our brains aren't wired to multitask, which means we end up diluting the quality and efficiency of what we are doing in the process. Focussing on just one thing without allowing distractions to intrude becomes its own form of sacred solitude. Truth is not paradoxical; it is as simple as God and being alone in silence, we know everything about it.



Bhartendu Sood

Can There be a Sidhu in BJP also?

Just think of the scenario in Punjab hardly two months back, Captain Amarinder was the undisputed and unchallenged leader. Almost all Ministers and MLAs took pride in being on his right side. In the name of dissidence there were hardly one or two leaders. Captain was so confident of his place and loyalty of the cadre that he engaged Prashant Kishor as his Political advisor for fighting next elections of Punjab assembly by giving him a cabinet rank. High command had not the guts to intervene or interfere as it owed the existence of the Congress party in Punjab to Captain Amarinder Singh. Such was Captain's perceived popularity that the common man always thought that it was not the Congress party which was ruling Punjab State but it was the establishment headed by Captain Amarinder Singh who was favoring the Congress party by remaining with them.



But then the Cricketer turned politician Sidhu, whom Captain had not allowed to raise his head all these years, came on the scene all of a sudden. Ambitious as he is, he knew that it was now or never for him if he had to fulfil his ambition of heading the Punjab State. He showed relentless guts to take the bull by the horns. Used tactics, his usual gift of gab and man-management skill to convince the party high command and other second line Congress party leaders in Punjab and MLA's that Captain's days were over and it is he who could give them another stint of power in Punjab. His forbearance and courage to not accept defeat brought things his way. At one time it looked like he had lost to all mighty and powerful Captain, but in a sudden rebound, he put Captain on the floor and that was the final punch.

One Thing is clear that the loyalty to any autocrat leader is transitory. Loyalty of the cadre remains till the leader looks mighty & invincible, not capable of losing. Cadre puts up with the autocratic and dictatorial style of functioning of a leader till they have no alternative. But, once they find that some other leader has shown the grit to challenge him, loyalty starts shifting and a huge facade around the autocrat leader collapses in a short time as happened in the case of Captain Amrinder Singh's. Who can believe that out of 72 MLAs today almost 65 are with Sidhu.

Point is what happened with Captain Amarinder Singh can happen with Modi also who is more Autocratic than Captain with a record of governance any day worse than Captain Amarinder. It is to Amrinder's credit that if his performance has nothing to speak about, he didn't commit the type of blunders that Modi committed in the last seven years. Now, it is the question of any mass leader in BJP showing enough courage as was shown by Sidhu.

All is not well within the BJP. Modi has his loyalists and stooges everywhere. Infect at all important positions and Ministries, he has taken care to put his stooges' proverbial bhagtas' even by sacrificing competence. It is to Modi's advantage that opposition is fragmented and no leader has shown the willingness to provide leadership to regional satraps. Under the situation change has to come out from within BJP. If any leader in BJP shows the guts to take the plunge, then the castle around Modi & Shah will collapse even faster than that of Amarinder.

पुस्तक

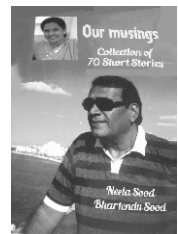
(English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम **Our Musings** है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही है जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये हैं। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक इंग्लिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए हैं
न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मान्य है।

राजा रामोहन राय हिन्दु समाज के महान सुधारक

भारतेंदुसूद

मैं जिस व्यक्ति की बात कर रहा हूँ वह एक हिन्दु के रूप में पैदा हुये और ईसाई के रूप में परलोक सिधारे। साधारण हिन्दु व्यक्ति सिर्फ इसी बात से उनका मान नहीं करेगा। मैंने उनका जीवन पढ़ा और बहुत अधिक प्रभावित हुआ। ऐसे में उनके 250 वे जन्म दिवस पर उनके बारे में कुछ लिखकर अपने उदगार अवश्य प्रगट करूंगा।

पहली बात जिस ने मुझे उन के बारे में प्रभावित की वह यह थी कि वह लकीर के फकीर नहीं थे। उन्होने अपनी शिक्षा का बहुत सही प्रयोग किया। उदाहरण के लिये उन्होने एक ईश्वर की बात की अर्थात ईश्वर एक है अनेक नहीं जैसे कि हिन्दु धर्म में उस समय मान्यता थी। यह उन की धारणा वेदों और कुरान को पढ़ने के बाद बनी। इस से एक बात तो



तय है कि स्वामी दयानन्द की तरह उन्होने भी इस बात को माना कि वेद एक ईश्वर की बात करते हैं। वह बंगाल के ब्राहमण परिवार से थे, ऐसे में एक ईश्वर की बात करना और मूर्ती पूजा को गलत कहना और ब्राह्मणवाद के विरुद्ध आवाज उठाना उनके साहस और प्रकाशवान होने का सबूत है। हम आर्य समाज में कहते हैं कि व्यक्ति को सत्य को ग्रहण करने और असत्य को दोड़ने में सदैव तत्पर रहना चाहिये। यह गुण राजा रामोहन राय में देखने को मिला। दूसरों के धर्मों के बारे में नुकताचिनी करना बहुत आसान है परन्तु व्यक्ति वह है कि जो अपने धर्म को भी उसी दृष्टि से देखे और जो बातें उसे अपने धर्म में ठीक न लगें, उनके विरुद्ध आवाज उठाये। यह राजा रामोहन राय की महानता है कि ब्राहमण होते हुये भी उन्होने हिन्दु धर्म की बुराईयों को लोगों के सामने रखा और अंग्रेज सरकार का विश्वास जीत कर उन बुराईयों को दूर करने के लिये ठोस कदम उठाये। स्वामी दयानन्द की तरह ही उन्होने मूर्ती पूजा को हिन्दु धर्म में फ़ैली बुराईयों के लिये जिम्मेवार ठहराया। यही नहीं जैसे पश्चिम के संदर्भ में मार्टिन लूथर ने मध्यकालीन गिरावट और भ्रष्टाचार के खिलाफ बाईबल को मानक बनाया उसी तरह राजा रामोहन राय ने वेद को मानक माना, क्योंकि उन्होने पाया वेद प्राचिनतम ग्रंथ है और मिलावट रहित है, परन्तु लूथर से इस लिये वह अलग थे क्योंकि जब कि उन्होने दूसरी सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों में जो कुछ अच्छा पाया उसे अपनी विचारधारा में शामिल किया, लूथर ने ईसाइयत से आगे या ईसाइयत की बुराईयों को झांक कर नहीं देखा। हमारे वेद भी यही कहते हैं कि अच्छे विचारों को चारों दिशाओं से आने दो। ईसलाम को उन्होने एकेश्वरवाद के लिये सराहा। ईसाइयत को प्राणी सेवा और नैतिक मूल्यों के लिये सराहा। उनका मानना था कि अध्यात्मिक चिन्तन के लिये वैराग्य या फिर सन्यास लेने की आवश्यकता नहीं है जो कि आज के युग में मेरे जैसे बहुत से व्यक्ति मानते

है। वैराग्य और सन्यास तो कोई भी व्यक्ति ले सकता है परन्तु संसार में रहते हुये वैरागी और सन्यासी की तरह रहना बहुत बड़ी बात है।

इस में कोई संदेह नहीं कि सैंकड़ों सालों की गुलाती के बाद हमारे हिन्दु धर्म में बहुत दोष आ चुके थे और आज भी है।—सती प्रथा, बाल विवाह, विधवाओं का पशुओं के सामान जीवन, जाति प्रथा का ऐसा रूप ले लेना जिस में उच्च जाति वाला अपने से छोटी जाति के व्यक्ति को पशुओं से भी बुरा समझता था, स्त्रियों के साथ हर तरह का भेद भाव, छूआछूत, तरह तरह के अन्धविश्वास, शिक्षा के नाम पर कुछ ब्राहमणों द्वारा संस्कृत पढ़ लेना ही सब कुछ था, विज्ञान और कानून शिक्षा के अंग ही न थे, चिकित्सा के नाम पर आर्युवेद नहीं बल्कि नीमहकीमी थी। ऐसे में राजा रामोहन राय ने पश्चिम की संस्कृति की अच्छी बातों का समन्वय किसा तो उस में बुराई क्या है। सचमुच पश्चिम की सभ्यता 13 वीं सदी के बाद हम से बहुत आगे हो गई थी चाहे उस में भी बुराईयां थी। चरित्र के बारे में वे लोग हम से आगे थे और आज भी है इसी लिये तो कुछ मुठी भर अंग्रेज हम पर शासन करते रहे। स्वामी दयानन्द ने भी चरित्र को आधार बना कर अंग्रेजों की बहुत प्रशंसा की है। राजा रामोहन राय का मानना था कि यकीनन वैदिक युग भारत का सब सं अच्छा दौर था लेकिन समय के साथ इस में स्वार्थी तत्वों ने मूर्ती पूजा, बहुदेववाद, बालविवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध, सति प्रथा, जाति प्रथा व ब्राहमणवाद जैसी बुराईयों को हिन्दु धर्म का अंग बना दिया। बहुतों का मानना है कि राजा रामोहन राय पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह ऐलान किया कि उपर लिखी बुराईयों का वेदों और उपनिषदों में कहीं उल्लेख नहीं है। राजा रामोहन राय के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली जो कि ब्राहमणवाद को प्रोत्साहित करती थी और विज्ञान, रसायन, शरीर सचना शास्त्र से दूर थी, समाज की समस्याओं व आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं थी, ऐसे में पश्चिमी शिक्षा प्रणाली को अपनाना ही उचित था। जाति प्रथा व ब्राहमणवाद, मूर्ती पूजा, बहुदेववाद को दूर करने के उद्देश्य से उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की जिसक बहुत शिघ्र ही सारे भारत में प्रसार हो गया। यहां यह कहना गलत नहीं होगा ब्रह्म समाज ने स्वामी दयानन्द को अपने बहुत नजदीक पाया था कारण दोनों की सोच सुधारवादी थी व दोनों ही हिन्दु धर्म को जाति प्रथा व ब्राहमणवाद, मूर्ती पूजा, बहुदेववाद से मुक्त करना चाहते थे।

मेरे अनुसार राजा रामोहन राय की दो गलतियां यह थी कि वह भारत को अपना रण क्षेत्र बनाने की बजाये योरप में रहने लगे दूसरा उनका ईसाइयत की तरफ वहां रहते हुये अधिक झुकाव हो गया परन्तु इनके बावजूद यह कहना गलत न हागा कि वह स्वामी दयानन्द की तरह एक महान समाज सुधारक, महान धार्मिक अन्दोलन के सस्थापक थे परन्तु स्वामी दयानन्द की तरह वह देश की स्वतन्त्रता के बारे में न सोच पाये और न ही वेदों के ज्ञान को सब के सामने लाने के लिये उचित कदम ले सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजा रामोहन राय ने अतीत को भूले बिना पश्चिम के साथ भारतीय मूल संस्कृति का समन्वय किया जो कि बहुत ही सराहनिय बात है। उनकी जीवन केवल 61 साल था 1772—1833 परन्तु इसी छोटे काल में उन्होंने हिन्दु धर्म के पुनर्जागरण का बीज बोया।



Vedic Philosophy and Holistic Human Development-Part-II

Shri Satya Pal Singh

As Veda is eternal and true, its religion, its philosophy is also true. The foundation of man's true happiness is Dharma. Vedic Philosophy defines Dharma (religion) as the means and measures which provide man an all round development in this world and ensures his salvation thereafter. Vedic Philosophy underscores the importance of simultaneous worldly and spiritual development of man.



The holistic development of man starts from even before its birth. What precautions and rules the parents must observe to have the best progeny is detailed in Vedic scriptures. The vitality and wisdom of scrupulously following the sixteen sacraments (Samskaars) from conception to cremation, for macro and micro development of man and his environs cannot be over emphasized. The four Ashrams (Phases of life) –Bramhacharya (studenthood), grihastha (married life), Vaanprastha (retired life) and Sanyas (life of renunciation) – is not only for individual betterment and contentment but for the larger social benefits.

Student phase is the formative stage to acquire the capacity and build capabilities for physical and intellectual well being to successfully face the world. The Vedic education has four pillars in Gyan (knowledge), Sabhyata (civilization), Dharmikata (righteousness) and Jitendriyata (self-restraint and control of mind).

The householder phase is to repay the three debts (social obligations), every human being is born with. Marriage is not only for recreation and procreation but for the ultimate satiation of all desires for material pleasures and progress so that one advances spiritually in later life and secures the break from the endless cycle of birth and death. Earning wealth and its enjoyment and charity for good cause is also a part of married life.

Vaanprastha is retired life for guiding the family and society with one's knowledge and experience and slowly moving away from the bonding of familial ties and attachment to the material world. The last and the optional phase of life – Sanyas – is to work for the society without any prejudice of any caste, class, creed, community or country and also to focus on one's inner illumination.

All the problems in the world can only be because of four reasons either in their individual capacity or the combination of them. They are Agyaan (ignorance), Anyay(injustice), Abhava (deprivation) and Aalasya (lethargy). To challenge and redress these problems, the Vedic philosophy classified the society into 4 Varnas (classes) – Brahman, Kshatriya, Vaishya and Shudra – for it could be the best division of labour. The varnas are classified on the basis of one's ability, nature, profession and deeds and not based on the house of their birth. Varnas are changeable and they provide scope for social mobility. Shudras are not untouchable or a despicable class as depicted in medieval and modern India. They were an integral part of society in ancient time just like the legs in human body.

Simultaneously, the Vedic philosophy states that there are 4 ingredients of Dharma viz. (truth, compassion, charity and dignity of labour). And to protect these pillars, the concept of 4 Varnas was divinely ordained. The Brahman (intellectual) will protect the 'truth' through his study; Kshatriya (warrior) will ensure 'compassion' through fairness and justice; Vaishya (businessman) will keep the tradition of 'charity' alive through earning wealth and Shudra will provide sustenance to the dignity of labour.

नकारात्मक सोच को भी शक्ति का रूप देकर आप बड़े काम कर सकते हैं

नीला सूद

अक्सर नकारात्मक सोच से दूर रहने की ही बात की जाती है जो कि ठीक भी है परन्तु नकारात्मक सोच को शक्ति का रूप देकर आप बड़े काम कर सकते हैं और इतिहास कहता है कि बहुत से महान व्यक्ति इस नकारात्मक सोच को शक्ति का रूप देकर यादगार कार्य करने में सफल हुये ।



नकारात्मक सोच क्रोध, पीड़ा, आक्रोश, शर्म, कसूरवान महसूस करना आदि आदि के कारण हो सकती है परन्तु यदि यही सोच आपको कुछ करने के लिये प्रेरित करती है तो बहुत अच्छी हो सकती है । जब महात्मा गांधी को दक्षिण अफ्रिका में गाड़ी से बाहर फेंक दिया गया तो उनके आक्रोश ने उनको एक नई दिशा दी और वह मोहनदास जो कि एक बकील बनने के सपने तक ही सीमित था अग्रेजो के विरुद्ध भारत की लड़ाई में नायक बन कर उभरा ।

कालिंगा के युद्ध के बाद जब राजा अशोक का ध्यान युद्ध में मारे गये लाखों सेनानियों की और लाया गया तो राजा आशोक इतने दुखी हुये कि उस दुख ने ही उन्हें बौद्ध धर्म का सब से बड़ा प्रचारक बना दिया और उन्होने न केवल भारत में ही बल्कि देश विदेश में भी बौद्ध धर्म को ले गये ।

इसी तरह आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जब शिव की मूर्ती पर चूहों को भोग लगाते देखा तो इस विचार ने कि यह कैसा भगवान है जो कि अपनी रक्षा एक छोटे चूहे से भी नहीं कर सकता, वेदों को वापिस ढूँड निकालने वाला युग परिवर्तक ऋषी बना दिया ।

महान कवि तुलसी दास की कहानी को कोन नहीं जानता । पत्नी द्वारा दी गई ताड़ना ने उन्हें गलानी से भर दिया परन्तु उन्होने उसे शक्ति का रूप देकर महाकाव्य तुलसी रामायण बना दी । प्रभु राम का जीवन गाथा को सुनने का जो आनन्द कवि तुलसी दास की रायण में रचि चौपाईयों में है वह किसी और में नहीं । जैसे प्रभु राम का नाम अमित है वैसे ही कवि तुलसी दास का नाम उस ताड़ना के कारण अमित हो गया है । विफलता से पैदा हुई सोच को पनपने न दें बल्कि उसे दूसरी दिया देकर कुद करने का संकल्प ले ले । मझे याद है कि मेरे एके मित्र दो बार मैडिकल की ऐनटरैस में असफल हुये कुछ निराशा के बाद उन्होने संकल्प लिया कि मैं इस से भी अच्छा कुद कर के दिखाउंगा और वह प्रशासनिक सेवा में सफल हुये । असफलता, क्रोध, पीड़ा, आक्रोश, शर्म, कसूरवान महसूस करना आदि सभी भावनाओं में व्यक्ति को एक दर्ई दिशा देकर कुछ करने के लिये शक्ति देने की क्षमता है बशरतिया हम उसी बन्द दरवाजे के बारे में ही सोचकर अपने को दुखी और शोकाकुल न बनायें । आदमी के टूटे हुये सपने ही उसे बड़े मुकाम की ओर ले जाते है ।

इस तरह हम देखते हैं कि क्रोध, पीड़ा व आक्रोश हमें न्याय के लिये लड़ने की ताकत देते है । शर्म और गलानी हमें अपने आप को बदलने के लिये प्रेरित करती है । कुछ खोने के बाद ही जो हमारे पास होता है उसकी कीमत समझने लगते है । इसलिये नकारात्मक सोच को शक्ति का रूप देकर आप बड़े काम करने का बीड़ा लें ।

क्या कारण है हमारे मानसिक तनाव का

एक बहुत विद्वान महात्मा एक शहर में पधारे तो वहां के लोग अपने मन की शंकाओं के समाधान के लिये उनके पास पहुंचने लगे। एक व्यक्ति ने महात्मा से प्रश्न किया कि आज जब कि हमारे पास जीवन को सुखमय ढंग से जीने के लिये पहले से कहीं अधिक साधन है फिर भी हमारे मन में तनाव पहले से अधिक क्यों है? यही नहीं यह तनाव हमारे को मानसिक और शारिरिक तौर पर रूगण बना कर जीवन को नीरस करता जा रहा है।

महात्मा मुस्करा दिये फिर थोड़ी देर बाद जो उन्होंने कहा वह इस प्रकार है-----“मुझे विश्वास है कि आपने मयुजिकल कुर्सीयों का खेल कभी न कभी खेला होगा ओर अगर खेला नहीं तो देखा अवश्य होगा। अक्सर क्या होता है कि खेल के शुरू में कुर्सीयां लगभग उतनी ही होती हैं जितने की खिलाड़ी, इसलिये संगीत के चलते हुये न तो कोई खाली कुर्सीयों पर अधिक नजर रखता है और न ही संगीत के रूकने पर खिलाड़ियों को अधिक भागदौड़ करनी पड़ती है। आराम से ही सब को कुर्सी मिल जाती है। पर जैसे जैसे खेल बढ़ता है और कुर्सीयों की संख्या कम की जाती है, भाग लेने वाले खाली कुर्सीयों की तरफ पैनी नजर रखते हुये देखे जाते हैं और संगीत रूकते ही भाग कर खाली कुर्सी पर बैठने की कोशिश करते हैं। जब खेल का अन्तिम भाग आता है तो स्थिती यह पहुंच जाती है कि लोग खाली कुर्सी पर बैठने के लिये एक दूसरे को धक्का तक दे देते हैं।”

“ऐसा ही कुछ हमारे सभी के जीवन मे हो रहा है। इस भौतिक उन्नती ने लोगों की भौतिक इच्छाओं को भी बढ़ा दिया है और व्यवसायिक विज्ञापन आग में घी का काम कर रहे हैं। लोग अधिक से अधिक, थोड़े समय में ही प्राप्त करना चाहते हैं। पहले थोड़ों के पास ही अपना मकान होता था। आज हाल यह है कि एक मकान होने के बाद भी आदमी दूसरे व तीसरे फ्लैट को पाने का संघर्ष कर रहा है। ऐसे में थोड़े साधनों के लिये अधिक से अधिक लोग पंक्ति में हैं। इस तरह जीवन मयुजिकल कुर्सीयों के खेल की तरह ही बन गया। जैसे ही कुर्सीयां कम हो रही हैं भाग दौड़ बढ़ रही है और यही आप जैसे लोगों के मानसिक तनाव का मुख्य कारण बन रहा है।”

यह सुनने के बाद एक श्रोता ने पूछा-----“महात्मा, इस मानसिक तनाव को कम करने का क्या उपाय हो सकता है?” महात्मा बोले-----“जिन के पास साधन पहले से हैं या जिन्होंने प्राप्त कर लिया है उनको उस दौड़ में शामिल नहीं होना चाहिये। यदि आपके पास घर है तो आप दूसरे घर के लिये क्यों ईच्छा करें खास कर यह जानते हुये कि करोंडो ऐसे हैं जिन के सिर पर छत भी नहीं। ऐसी ईच्छाएं जो कि सिर्फ झूठी शानशोकत को पूरा करने के लिये, स्वार्थ से वशीभूत की जाती है वही मानसिक तनाव का मुख्य कारण है। इसलिये मानसिक तनाव को कम करने के लिये यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक संग्रह करने का लोभ हम त्यागें। जब हम ऐसी बहुमूल्य वस्तुओं को अपने पास संग्रह करना प्रारम्भ कर देते हैं जिनका उपयोग कुछ भी नहीं होता तो वे हमारी परेशानी को ही बढ़ाती हैं जो कि मानसिक तनाव का मुख्य कारण है। ऋषि पतंजली ने जो मोक्ष के लिये अपरिग्रह की बात की है वह इसी को उजागर करती है अर्थात भौतिक वस्तुओं के संग्रह से दूर रहें।

महात्मा की कही बात जब हम बुढ़ापे में पर्दापण कर जाते हैं तो बिल्कुल ठीक लगती है। जो हमने संग्रह किये होते हैं वे सुख देने के स्थान पर परेशानी का कारण बन जाते हैं।



वाल्मीकि रामायण से

कृष्णचन्द्र गर्ग

1. राम कौशल्या से – पति का परित्याग करना स्त्री के लिए सबसे बड़ी क्रूरता है। (21-9)
2. राम सीता से – देखना तुम भरत के सामने मेरी प्रशंसा कभी मत करना क्योंकि ऐश्वर्य सम्पन्न पुरुष दूसरे की प्रशंसा सहन नहीं कर सकता। (22-8)
3. राम सीता से – मैं तुम्हें उसी प्रकार नहीं छोड़ सकता जैसे चरित्रवान मनुष्य अपनी कीर्ति को नहीं छोड़ सकता। (25-27)
4. दशरथ राम से – हे राम ! कैकेयी ने वरदान के द्वारा मुझे धोखा दिया है। अतः तुम मुझे बन्दी बनाकर बल पूर्वक अयोध्या का राजा बनो। (28-22)
5. राम दशरथ से – राजन् ! आप अनेक वर्षों तक पृथ्वी का पालन करें। मैं आपको झूठा नहीं बनाना चाहता। मैं अवश्य वन में वास करूँगा। (28-24)
6. दशरथ राम से – हे वत्स ! मैं सत्य की शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम्हारा वन जाना मुझे बिल्कुल भी पसन्द नहीं है। परन्तु क्या करूँ मैं भस्म में छिपी हुई अग्नि की भान्ति भयंकर एवं कुटिल अभिप्राय वाली कैकेयी की चाल में फंस गया हूँ। (28-31)
7. सुमन्त्र कैकेयी से – कैकेयी ! तू अपने पति का तिरस्कार मत कर। स्त्रियों के लिए पति की इच्छा के अनुसार चलना करोड़ों पुत्रों के स्नेह से भी बढ़कर है। (29-3)
8. सुमन्त्र कैकेयी से – नीम से कभी मधु नहीं चूता – यह लोकोक्ति ठीक ही है। यही कारण है जैसी तेरी माता थी वैसी ही तू भी निकली। (29-8)
9. सुमन्त्र कैकेयी से – यह लौकिक प्रवाद मुझे ठीक ही प्रतीत होता है कि पुत्र पिता के स्वभाव वाले और लड़कियां माता के स्वभाव वाली होती हैं। (29-9)
10. दशरथ का विलाप – प्रतीत होता है कि मैंने पूर्व जन्म में बहुत सी गायों को उनके बछड़ों से अलग कर दिया था अथवा बहुत से प्राणियों का वध किया था, इसीलिए मेरे उपर यह दुःख आ पड़ा है। (32-10)
11. कौशल्या सीता से – जो स्त्रियां पति द्वारा सदैव संस्कृत और सम्मानित होने पर भी विपत्तिकाल में पति का आदर सम्मान नहीं करतीं वे स्त्रियां कुलटा कहलाती हैं। (32-21)
12. कौशल्या सीता से – कुलटा स्त्रियां असत्य बोलने वाली तथा विकृत विचार वाली होती हैं। उनके मन की बात बड़ी कठिनाई से जानी जाती है। वे हृदयशून्य होती हैं। उनके संकल्प पापपूर्ण होते हैं। वे क्षणमात्र में अपने पतियों को त्याग देती हैं। (32-23)
13. कौशल्या सीता से – उत्तम कुल, किया हुआ उपकार, धर्म-विद्या, वस्त्राभूषणों का दान और वैवाहिक बन्धन – कोई भी बात इन कुलटा स्त्रियों के मन को वश में नहीं कर सकती क्योंकि वे चंचल हृदय वाली होती हैं। (32-24)
14. कौशल्या सीता से – तू मेरे पुत्र राम का कभी अपमान मत करना। वह चाहे धनी है या निर्धन – तेरे लिए तो देवता के समान पूज्य एवं मान्य है। (32-26)
15. सीता कौशल्या से – हे आर्ये ! आप असती स्त्रियों से मेरी तुलना न करें। जैसे चन्द्रमा की ज्योत्सना चन्द्रमा से पृथक नहीं हो सकती, उसी प्रकार मैं भी धर्म से कभी विचलित नहीं हो सकती। (32-29)
16. सीता कौशल्या से – जैसे बिना तार के वीणा नहीं बजती, बिना पहिए का रथ नहीं चलता, उसी प्रकार बिना पति के स्त्री भी सुख नहीं पाती चाहे वह सौ पुत्रों वाली ही क्यों न हो। (32-30)
17. सीता कौशल्या से – पिता, माता तथा पुत्र – ये सब परिमित सुख के देने वाले हैं, परन्तु पति अमित सुख का देने वाला है। अतः ऐसी कौन अभागी स्त्री होगी जो पति का आदर सम्मान न करेगी। (32-31)
18. जब राम वन को जाने लगे – अयोध्या के सभी बालक और बूढ़े व्याकुल हो राम के रथ के पीछे जैसे ही दौड़ने लगे जैसे धूप से सन्तप्त व्यक्ति पानी की ओर दौड़ता है। (33-14)
19. जब राम वन को जाने लगे – वे लोग राम को उत्कण्ठा पूर्वक उसी प्रकार देखते थे जैसे प्यासा पानी को देखता है।



मात्र गंगा में स्नान नहीं अपितु मन भी गंगाजल सा निर्मल होना चाहिए

सीताराम गुप्ता



कोरोना संकट के बावजूद हरिद्वार में आयोजित होने वाले कुंभ में देश के कोने-कोने से आए करोड़ों श्रद्धालु अपने पापों से मुक्त होने, धर्मलाभ अथवा मोक्ष की कामना से गंगा के शीतल जल में डुबकियाँ लगाएँगे। प्रश्न उठता है कि स्नान अथवा गंगास्नान क्या है? क्या शरीर को गीला कर लेना मात्र ही स्नान है? शरीर की बाहरी स्वच्छता अनिवार्य है अतः स्नान भी अनिवार्य है लेकिन आजकल जिन नदियों को हम अपनी अज्ञानता से स्वयं प्रदूशित कर रहे हैं क्या उनमें गोता लगाना स्नान ही है? स्नान तो शुद्ध और स्वच्छ जल में ही किया जाना

चाहिए। क्या हमारी नदियाँ इस योग्यता को पूर्ण करने में सक्षम हैं? वैसे भी शरीर की मात्र बाहरी स्वच्छता ही नहीं आंतरिक स्वच्छता भी अनिवार्य है। आंतरिक स्वच्छता से क्या तात्पर्य है?

आंतरिक स्वच्छता से तात्पर्य है मन की स्वच्छता अथवा भावों की शुद्धि। पुराने समय में कुंभ जैसे आयोजन इसी उद्देश्य से किए जाते थे। शरीर का स्नान तो बहाना होता था वास्तविक उद्देश्य होता था संत समागम व सत्संग द्वारा मन की शुद्धता। आज वह उद्देश्य कहीं दिखलाई नहीं पड़ता। मात्र गंदे पानी में डुबकी लगाने को पुण्य अथवा मोक्ष का मार्ग मान लिया गया है। कर्मकाण्ड द्वारा मोक्ष संभव नहीं, यह संभव है मन की पवित्रता द्वारा। वास्तव में विकृत, दूशित अथवा नकारात्मक मनोभावों से मुक्ति ही मोक्ष है। तीर्थयात्रा अथवा स्नान इसमें सहायक हो सकते हैं लेकिन पहले तीर्थ स्थानों और नदियों को इस योग्य तो बनाइए। और तीर्थ स्थानों और नदियों को स्वच्छ और पवित्र बनाने से पहले जरूरी है मन को पवित्र बनाना, उसे निर्मल करना। कबीर की एक साखी है:

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर,
पाछे-पाछे हरि फिरै, कहत कबीर-कबीर।

कबीर कहते हैं कि मनुष्य के मन के गंगा जल की तरह निर्मल हो जाने पर हरि अर्थात् ईश्वर को खोजने की आवश्यकता नहीं अपितु हरि ही मनुष्य के पीछे-पीछे दौड़ा चला आएगा। संत रविदास भी कहते हैं कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। कबीर और रविदास ही नहीं सभी संतों ने मन की निर्मलता पर बल दिया है और निर्मलता भी गंगाजल -सी। एक प्रार्थना में भी पंक्ति आती है कि गंगाजल सा निर्मल मन हो, मिला मुझे विद्या का धन हो। अब एक और प्रश्न उठता है कि मन की निर्मलता से क्या तात्पर्य है और इसकी क्या उपयोगिता व महत्त्व है तथा मन की निर्मलता की उपमा गंगा के जल से क्यों दी जाती है?

गंगा भारत की एक अत्यंत पवित्र नदी है जिसका जल काफी दिनों तक रखने के बावजूद दूशित अथवा अशुद्ध नहीं होता जबकि साधारण जल कुछ दिनों में ही सड़ जाता है। गंगा का उद्गम स्थल गंगोत्री या गोमुख है। गोमुख से भागीरथी नदी निकलती है और देवप्रयाग नामक स्थान पर अलकनंदा नदी से मिलकर आगे गंगा के रूप में प्रवाहित होती है। भागीरथी के देवप्रयाग तक आते-आते इसमें कुछ चट्टानें घुल जाती हैं जिससे इसके जल में ऐसी क्षमता पैदा हो जाती है जो उसके पानी को सड़ने नहीं देती।

हर नदी के जल में कुछ खास तरह के पदार्थ घुले रहते हैं जो उसकी विशिष्ट जैविक संरचना के लिए उत्तरदायी होते हैं। ये घुले हुए पदार्थ पानी में कुछ खास तरह के बैक्टीरिया को पनपने देते हैं तो कुछ को नहीं। कुछ खास तरह के बैक्टीरिया ही पानी की सड़न के लिए उत्तरदायी होते हैं तो कुछ पानी में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को रोकने में सहायक होते हैं। वैज्ञानिक षोधों से पता चलता है कि गंगा के पानी में भी ऐसे बैक्टीरिया हैं जो गंगा के पानी में सड़न पैदा करने वाले कीटाणुओं को पनपने ही नहीं देते इसलिए गंगा का पानी काफी लंबे समय तक खराब नहीं होता और पवित्र माना जाता है।

कहा गया है कि संकल्पविकल्पात्मकं मनः अर्थात् मन संकल्प और विकल्प स्वरूप है। मन में हर पल असंख्य विचार आते और जाते हैं और उनमें परिवर्तन होता रहता है। मन अत्यंत चंचल है, कहीं एक स्थान पर टिकता नहीं, भागता रहता है। इसमें परस्पर विरोधी विचारों का प्रवाह चलता रहता है। कभी अच्छे विचार तो कभी बुरे विचार। मन की इसी चंचलता के कारण मनुष्य अनेक समस्याओं और व्याधियों से ग्रस्त रहता है। विचारों के अनुरूप ही हमारी आदतों का विकास होता है और विचार ही कर्म करने के लिए उत्प्रेरक तत्त्व की भूमिका का निर्वाह करते हैं। सकारात्मक विचार हमें सही कर्म की ओर अग्रसर करते हैं तो नकारात्मक विचार ग़लत कर्म की ओर।

हमारे अच्छे स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक सोच ही उत्तरदायी है तो बुरे स्वास्थ्य के लिए नकारात्मक सोच। मन की चंचलता के कारण अथवा मन की निर्मलता के अभाव में ही हम अपनी चेतना से एकाकार नहीं हो पाते हैं। मन की निर्मलता से तात्पर्य है मन का विकारों अर्थात् ग़लत विचारों से रहित होना। विकार रूपी बैक्टीरिया ही हमारे मन की निर्मलता को नष्ट करते हैं अतः उनसे छुटकारा पाना अनिवार्य है। जहाँ तक जल की निर्मलता की बात है शुद्ध जल का न तो कोई स्वाद होता है और न कोई रंग या गंध ही। हम प्रायः कहते हैं कि ये पानी मीठा है और ये खारा है। वास्तव में शुद्ध पानी मीठा नहीं होता अपितु जो पानी खारा नहीं होता या जिसमें अशुद्धियाँ नहीं होतीं उसे ही मीठा पानी कह देते हैं।

शुद्ध जल बिलकुल स्वादहीन, रंगहीन तथा गंधहीन होता है। हमारा मन भी शुद्ध पानी की तरह ही होना चाहिए तभी वह निर्मल माना जाएगा अर्थात् मन में भी किसी प्रकार के भाव नहीं होने चाहिए लेकिन यह असंभव है क्योंकि मन विचार शून्य नहीं हो सकता। विचार के अभाव में तो कर्म ही संभव नहीं। जैसे विचार या भाव वैसा मनुष्य अतः मनुष्य को कर्मशील बने रहने के लिए तथा सही दिशा में अग्रसर होने के लिए अच्छे विचारों से ओतप्रोत होना चाहिए। मनुष्य नकारात्मक विचारों या भावों के वशीभूत होकर ही ग़लत कार्य करता है अतः विचारों पर नियंत्रण अनिवार्य है और विचारों पर नियंत्रण के लिए अनिवार्य है मन की निर्मलता।

जिस प्रकार पानी को सड़ने से रोकने के लिए पानी में पनपने वाले घातक बैक्टीरिया को रोकने के लिए उसमें उपयोगी बैक्टीरिया की उपस्थिति अनिवार्य है उसी प्रकार मन में भावों के प्रदूषण को रोकने के लिए सकारात्मक विचारों के निरंतर प्रवाह की भी आवश्यकता है। जब भी कोई नकारात्मक विचार उत्पन्न हो सकारात्मक विचार द्वारा उसे समाप्त कर दीजिए। सकारात्मक विचार रूपी बैक्टीरिया द्वारा ही हम अपने मन को निर्मल कर सकते हैं और मन की निर्मलता का अर्थ है मन में राग-द्वेष आदि परस्पर विरोधी भावों व विकारों की समाप्ति द्वारा समता की स्थापना।

जब व्यक्ति समता में स्थित हो जाता है तो द्वंद्व की भी समाप्ति हो जाती है और द्वंद्व की समाप्ति ही वास्तविक उपचार है। सकारात्मक विचारों के निरंतर प्रवाह द्वारा न केवल शारीरिक व्याधियों का उपचार संभव है अपितु स्वयं के वास्तविक स्वरूप अथवा चेतना से एकाकार होना भी संभव है। स्वयं के वास्तविक स्वरूप अथवा चेतना से एकाकार होने का अर्थ ही है अपने अंदर के ईश्वर की खोज। मन की निर्मलता के बाद ईश्वर को खोजने की आवश्यकता ही नहीं रहती क्योंकि स्वयं ईश्वर ही पीछे-पीछे दौड़ा चला आता है अर्थात् मनुष्य के मन में आ उपस्थित होता है। यही मन की वास्तविक निर्मलता है। यही सच्ची तीर्थयात्रा है और यही वास्तविक महाकुंभ में स्नान।

Life and livelihood

Neela Sood

Today, when we are living in a scary times and are not sure what tomorrow will bring, two anecdotes revealed to me how their importance can differ from men to men depending upon the economic condition.



The first anecdote relates to stampede in the Kumbh gathering in Hardwar. An elephant belonging to a group of sadhus goes berserk and starts running towards the crowd. Finding the elephant rushing towards them, people start running to save their lives. The one who is ahead of everyone is a leper in advanced stage, whose sight could horrify others. In a tizzy, a onlooker with philosophical bent thinks to himself — what is in his life, for which he is running to save himself from the clutches of death?

First truism that dawned on me is that nobody wants to die and wants to live as long as the creator of this Universe permits his stay on this planet. A decrepit, bedridden old man, in the grip of various ailments, and living on external life aids, may be in fathomless agony, but if asked, maximum chances are that he may show his intent to live as long as possible.

Second, anecdote relates to a young fisherman who would daily go to a particular spot on the sea shore to catch fish. A wealthy person, during his daily walk, would enjoy seeing him in action. One day as the fisherman came out, he asked him out of curiosity, "Is your father also in the same profession?" "Of course, he was but one big fish swallowed him when he was deep inside" It was followed by another enquiry, "What about your brother and uncle" "They were swept away by the high tides of the sea" Somewhat perplexed by the fisherman's reply, that person asked him about his grandfather. "I am told that he also met the watery grave in the same sea" replied the fisherman.

By now completely flummoxed, that man kept on looking at the fisherman's face which betrayed no emotions. After a while he said, "Young man, this sea has been the cause of all the deaths in your family and still you are continuing to explore in the same sea. Why don't you do something else, I can help you."

Fisherman was in splits. After a while he asked that man "What is your father doing?" "He is no more, he died of cardiac arrest at a young age" replied that man.

"Look, your father didn't come to this sea but still the death had its way and I can presume that none of your other kin who are no more, had died in this sea or because of this sea. What I really want to tell you is that when any person's days on this planet are finished, death will not spare him whether he is in the sea or on the earth or even in the air in an aeroplane. So why to think of death. Keep on doing your work." fisherman sermonized like a sage.

The second anecdote brought home the second truth that life and livelihood go hand in hand and are governed by our economic condition as even the present Covid virus demonstrated in the last two years, Which of the two will supersede the other depends how deep are our pockets. Small hawkers, without any concern for the spread of virus can be seen supplying vegetables, milk, fruit and our other daily needs even during the lock down. Their day starts at 4.AM and it continues late till evening. If you ask me they are wearing mask simply because it has been forced on them. Left to them they will not do. Indeed the fisherman and millions like him in our country love their life but livelihood has a much greater importance to them.

कृतज्ञता व साधनों को सीमित रखते हुये जीना ऐसा गुण है, जो कि हमें सही माईने में खुशी प्रदान करता है

भारतेन्दु सूद

किसी के किये उपकार को याद रखना जिसे हम कृतज्ञता कहते हैं, बहुत बड़ा गुण है, जीवन में आपकी सफलता में इस का बहुत बड़ा हाथ होता है। इस के विपरीत किसी के किये हुये उपकार को भूल जाना जिसे हम कृघनता कहते हैं, पाप समान होता है, ऐसा व्यक्ति योग्यता होने के बावजूद उन्नती नहीं कर पाता है और यदि उन्नती कर भी ले तो उसे सही माने में उसे खुशी नहीं मिलती है। इस के साथ ही जो व्यक्ति अपने सीमित साधनों का प्रयोग कर के जीवन में उठते हैं, उनके चरित्र में एक खास ही बात होती है।

उपर की दोनो बातों श्री मनोज परिन्दा , जिन्होंने चण्डीगढ़ के ऐडवाइजर रहते हुये बहुत यश पाया, के जीवन की इस घटना में सामने आती हैं,

—मेरे एक अध्यापक थे भुवानन्द मिश्रा। मैं जब 9वीं कक्षा में पढ़ता था तो वह स्कूल के हैडमास्टर थे। मैं उड़ीसा के एक छोटे से कस्बे जजपुर के एक सरकारी स्कूल में पढ़ता था। वह सरकारी स्कूल उड़िया माध्यम का था। वहां इंगलिश न के बराबर थी। हैडमास्टर साहब की सब से बड़ी खासियत यह थी कि वह रोजाना स्कूल आते थे। धोती कुर्ता



पहनते थे और उनके हाथ में गीता होती थी। भुवानन्द मिश्रा हमें इंगलिश और ग्रामर पढ़ाते थे। उन्होंने उस वक्त कहा था कि अगर जिन्दगी में आगे बढ़ना है तो इंगलिश सीखना बहुत जरूरी है। उन्होंने हमें टूटी फूटी अंग्रेजी बोलना सिखाया। हमारी इंगलिश में सुधार लाने के लिये उन्होंने एक इंगलिश ऐसोसिएशन बनाया और होनहार बच्चों को उस में शामिल किया। मुझे उस ऐसोसिएशन का सैक्टरी बनाया। इस के बाद हम एक घंटा इंगलिश में ही बात करते थे। यहां जो मैंने इंगलिश सीखी वह जीवन भर मेरे काम आई और चाहे जेएनयु का इटरवयु था या फिर आएएस, मुझे कोइसम्सया नहीं आई। मैं अपने शिक्षक भुवानन्द मिश्रा जी के योगदान को कभी भी भूल नहीं सकता। मैं अभी भी उन्हें याद करता हूं और करता रहूंगा।

एक चीज जिस से आज की पीढ़ी का विश्वास उठ गया है वह है अपने खर्चे को सिमित रख कर जीना या यूं कहे साधनों का बुद्धिमता से या यूं कहें सीमित ढग से प्रयोग। परन्तु उनकी यह सोच शायद गलत है कि वच्चों पर जितना अधिक पैसा खर्चेंगे वह उतने ही अधिक योग्य बनेंगे। मैं अपने आसपास में शिखर पर पहुंचे व्यक्तियों को जब देखता हूं तो मुझे उनकी इस सोच पर संदेह होने लगता है। जो आनन्द ईमानदारी व सच्चाई के जीवन को जीने में है वह असीमित साधनों के प्रयोग में नहीं। ईमानदारी भी तभी सम्भव है जब हम अपने साधनों को सीमित रखें।

Is Prayer a matter of soul or Soul & body both

Neela Sood

I have been reading articles on 'Prayer'. Writers of different shades have given their views but somehow one area which remained untouched is-----is prayer a matter of soul or of soul and body both?



People of different sects and religions are seen adopting different physical postures while offering prayer which makes one to infer that both soul and body have to take part in prayer. For example in many sects of Hinduism a man while offering prayer prostrates. Many tweak their ears then many press their nose. Many move up and down. Many press themselves against the wall. Many raise their hands. In a few places they dance even. Many are seen squatting with their hands on knees and two fingers joined. Even in Sikhism the one who offers prayer prostrates before Guru Granth sahib. In Islam also prayer is not only a spiritual hymn, it involves physical movements through standing, kneeling and prostration, combined with a conscious mental concentration on the verses recited in the prayer. A few beat their chests also. Christians also kneel on a table. Even in Arya Samaj, people are advised to sit straight and not bend.

This is not all, many believe that body has to be first cleaned by taking of shower or dip in the river then only prayer can be offered. Even sage Patanjali prescribes 'Shauch' i.e. cleanliness before 'Samadhi'. Then there are many who believe that a substance that generates fragrance like

sandalwood has to be applied on the forehead. There are many who believe that prayer has to be before taking food. But, in Punjab, where Jagrata is very popular form of prayer to goddesses, people are seen taking sumptuous food before the prayer is started. This makes one believe that in prayer' body has a vital role to play.

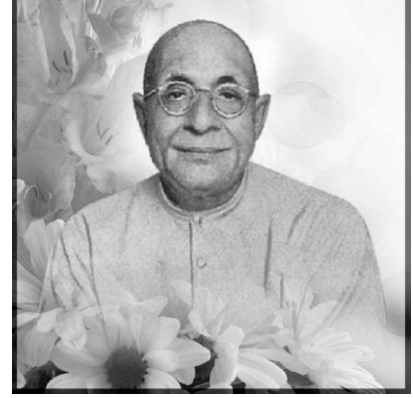
But, if body and physical postures have a role then what do we say of the disabled, sick and elderly who find it difficult to bend or move their limbs leave alone prostrating. When I questioned a learned scholar, his reply was that all bodily actions and postures are aimed at making the mind stable to help focusing on the divine power or any other power you have accepted; by detaching one from the worldly affairs. It is called, 'dhyana.' also. He may be right but I believe that the one who is already one with the higher up, does not need the physical postures and austerities. Prayer can be offered any time, in any position and in any state. All that we need is a peace of mind and what gives us peace of mind differs from an individual to individual. Many go to the bank of river, others choose a lonely place in the hills and in present time many need air conditioned big halls.

But, without a stable mind, all prayers are only rituals. When the mind is disturbed different postures help very little. So the peace of mind is very vital which in my opinion is not driven or influenced by the place. This peace of mind comes to those who remain happy by not allowing various setbacks or sense of euphoria to charge mind—called state of equanimity in Geeta, This peace comes to those who have full and unflinching faith in God. Who accepts that he alone is the creator of this universe. He has given us everything for our enjoyment and we are not the owner of these materialistic things. This peace of mind comes to those who keep themselves engaged in selfless service of humanity. This peace of mind comes to those who believe in performing their duty without complaints with surroundings.

कर्म फल का खेल

महात्मा आणन्द स्वामी

यह बात उस समय की है जब पाकिस्तान नहीं बना था। सिन्ध प्रान्त में सक्कर के नजदीक साधवेला एक तीर्थ है। वहां मुझे एक महन्त के आश्रम में एक रात्री रहने का अवसर मिला। प्रात उनके आश्रम में जब मैं भ्रमण कर रहा था तो एक साधु को देखा जो बहुत दुखी था और अकेले ही बैठा हुआ था। उसके नजदीक जाकर मैंने कहा—महाराज आप दुखी प्रतीत होते हैं। क्या कोई शारीरिक कष्ट तो नहीं आपको? साधु ने कहा—मुझे कोई शारीरिक कष्ट नहीं। मैंने पूछा किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो मुझे बतायें? वे बोले —मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। तो आप साधु होकर भी इतने दुखी क्यों हैं? मैंने उनसे पूछा। उदासी और दुख के कारण ही तो मैंने संसार छोड़ा है और साधु बना हूं। मेरे बहुत आग्रह करने पर उन्होंने अपनी कहानी सुनाई जो कि इस प्रकार थी



मेरा जन्म सक्कर में ही हुआ। वाल्यावस्था में मेरा एक मित्र था। हम दोनो बहुत ही निर्धन थे। हम दोनो धन कमाने के लिये बम्बई आ गये। भाग्य से व्यपार चमकने लगा। कुछ वर्षों बाद ही हम लाखों के स्वामी हो गये। एक दिन हमने घर वापिस जाने का निश्चय किया। पर तभी मेरे दिल में लोभ और पाप जाग उठा। मैंने सोचा क्योंकि दोनो धन के आधे आधे हकदार हैं, बांटने पर आधा पैसा उसे चला जायेगा। हां। अगर मैं उसे मार देता हूं तो सारे पैसे का मालिक मैं बन जाऊंगा। यह सोचकर मैंने विश खरीदा और उसे खिला दिया, जिस से की उस की मौत हो गई। पैसा देकर मैंने डाक्टर से झूठा प्रमाण पत्र ले लिया कि वह ऐसी बिमारी से मरा जिसका कोई इलाज नहीं था। अब मेरे पास 30-40 लाख रूपया था, गांव में पहुंच कर उसके परिवार को कुछ हजार देकर संतुष्ट कर दिया और उन्हें यह विष्वास हो गया कि वह स्वभाविक मौत से मरा और मैंने उसके इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी।

मेरे किये हुये पाप का किसी को भी पता नहीं लगा। अब मेरे पास बहुत धन था। मैंने आलीषान मकान बनाया, षादी की और धनी सेठों की तरह रहने लगा। कुछ देर के बाद मेरे घर में एक सुन्दर बालक ने जन्म लिया। ज्यूं ज्यूं वह बड़ा होता गया मेरा उस के साथ मोह बढ़ता गया। उसे पढ़ाया लिखाया और हर प्रकार की सुख सामग्री जुटा दी। वह 23 वर्ष का हुआ तो उस का विवाह कर दिया। किन्तु विवाह के चार माह पश्चात ही वह रूग्ण हो गया। रोग तो साधारण प्रतीत हो रहा था पर सिन्ध के डाक्टरों और हकीमों से वह ठीक न हुआ। दिन प्रतिदिन उस की दशा बिगड़ने लगी। उसे बम्बई ले गया पर वहां भी कोई डाक्टर उस का मरज पता न लगा सका। धीरे धीरे वह हड्डियों का पिंजर बन गया। मैं उसे जर्मनी ले गया वहां से अमेरिका पर कहीं भी उस की हालत में फरक न हुआ। आहिस्ता आहिस्ता मेरे मकान, कोठियां बिक रहे थे और जमा की हुई पूंजी समाप्त हो गई। अन्त मे निराष होकर मैं अपने घर सिन्ध वापिस आ गया।

उसके ठीक होने की उमीद खत्म हो चुकी थी, मैं ऋण लेकर गुजारा कर रहा था। हर समय उस की चारपाई के पास बैठा रहता। आखिर वह दिन आ गया जिस का डर था। वह मूर्च्छित हो गया था। कई दिन बीत जाने के बाद भी वह मूर्च्छा से बाहर नहीं आया। एक रात मैं जब उस की चारपाई के पास बैठा था तो देखता हूं कि उसने अपनी आंखे खाल दी थी। उसके सिर पर हाथ फेरते हुये मैंने कहा, —धन्य हो उस प्रभु का कि तुम होष में आये। उसने हाथ को हटाते हुये कहा—मैं तो होष में आ गया हूं पर तुम अभी तक नहीं आये।

मैंने प्यार से कहा—मेरे बच्चे, तू यह क्या कह रहा है। तू अच्छा हो जाये तो समझो मुझे सब कुछ मिल गया। वह फीकी सी मुस्कराहट के साथ बोला— मैं तुम्हारा हूँ कौन जो इस तरह मुझ से चिपक कर बैठे हो। मैंने उसके सिर पर हाथ फेरते हुये कहा—बेटा कैसी बातें कर रहे हो ? मैं तुम्हारा पिता हूँ। वह गर्जन के साथ हंसा और बैठ गया। देख मेरी और मैं कौन हूँ। मेरी हैरानगी की कोई सीमा नहीं रही और मैं भय के साथ कांपने लगा जब मैंने देखा कि खाट पर मेरा बेटा नहीं अपितु मेरा वही साथी था जिसका मैंने बम्बई में बध कर दिया था वह एक भयंकर हंसी के साथ बोला—मेरा धन छीनने के लिए तूने मुझे विश दिया था और मैंने तेरा पुत्र बन कर वह सारा धन वापिस ले लिया है। तेरे धन का सर्वनाश कर दिया है। अब तेरे पास मेरा कुछ नहीं जो मैंने लेना था, ले लिया है। इसलिये अब मैं जाता हूँ। और वह अतिम सांस लेकर गिर गया और मृतक घोशित कर दिया गया।

साधु रोते हुये बोला—यह है मेरी कहानी। क्या आपके पास इसकी कोई चिकित्सा है? मैंने धीरे से कहा मेरे पास चिकित्सा तो नहीं, पर वेद में कही यह बात है— व्यक्ति जैसे कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है। यह संसार लेन देन की मण्डी है। इसमें हमने जिससे लेना होता है, उससे लेने के लिये आते हैं। और जिसे देना होता है, उसे देने के लिये आते हैं। कभी बाप बन कर तो कभी पुत्र बन कर, कभी पत्नि बन कर तो कभी पति बन कर। जब तक लेना देना है मुक्ति नहीं होती। बुद्धिमान और ईश्वर भक्त वही है जो हर काम को करने से पहले अपने से यह प्रश्न करता है—इस में कुछ गलत तो नहीं? क्या मैं किसी का हक तो नहीं छीन रहा? क्या किसी के साथ धोखा फरेव तो नहीं कर रहा। यदि ऐसा लगता है तो अपने कदमों को वापिस खींच लें। यही ईश्वर भक्त की निषानी है। वरना उस साधु की तरह पछताना पड़ेगा और साधु बन कर भी शांति नहीं मिलेगी।

जब आप ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तो एक बात अवश्य प्रभु से कहें—हैं प्रभु मेरा आचरण धर्माअनुसार हो। मैं किसी से छलकपट न करूँ, किसी का हक न छीनू, किसी का बुरा न सोचूँ।

While the corrupt people take a short path that is full of deceit, the honest persons opt for a path that may be long but free from deceit. The honest person remains prepared for it even if it means longer time and obstacles. But in return he gets peace of mind and can sleep in a peaceful way, but a man who is corrupted always feels disturbed in his mind like the Sadhu of the above episode. He tries to buy peace by wearing ochre clothes or through medicines or even yoga but it eludes him.

All the scenes of heaven and hell are present in this world, every moment you can see the examples of justice of God. Whether your actions are auspicious or inauspicious, you have to bear the consequences. That is why God is teaching in the Veda, saying - Always remember your deeds, keep thinking what you have done because it is true that you will have to suffer for your bad deeds. Nothing can diminish the effect of your bad deeds not even charities. Every moment of life is precious, so do not let it go in vain with bad karma. Always work to increase the asset side with good deeds in your account because the result of your good deeds will be very pleasurable. The opposite is equally true, the fruits of your bad deeds will ultimately leave you suffer badly. Therefore pay attention to actions because God always does justice.

शील और गुणों का महत्व

आचार्य चाणक्य का संसार के अग्रणी नीतिवानों में अग्रणी स्थान है। उन्होंने नीतिवचन में लिखा—जैसे चंदन बृक्ष का अंश जाने पर भी अपनी सुगन्ध और शीतलता नहीं छोड़ता, कोल्हू में पिसे जाने पर भी ईख अपनी मधुरता का त्याग नहीं करता, इसी प्रकार मनुष्य को भी अपनी विपन्नता की स्थिति में अपने शील व गुणों का त्याग नहीं करना चाहिये। मनुष्य के व्यवहार की असली परीक्षा तब होती है जब कि वह असफल रहने के बाद या टुकराये जाने के बाद बुरे समय से गुजरता है।

आचार्य चाणक्य ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति अपने तप और अभ्यास से ऐसी स्थिति में पहुंच गया है कि वह सत्य ही बोलता है और झूठ का कभी सहारा नहीं लेता अर्थात् सत्यन्यायपूर्ण मार्ग पर ही चलता है, तो उसे किसी और तपस्या की आवश्यकता नहीं क्योंकि सत्य पर चलना ही धर्म का निचोड़ है।

इसी तरह जो व्यक्ति मन की पवित्रता को प्राप्त कर लेता है, सदाचार मार्ग पर ही चलता है, जिसका आचरण सदैव धर्मानुसार है, जो दूसरों की सेवा में लगा हुआ है, असहाय माता पिता का सहारा बन जाता है तो उसे किसी तीर्थ पर जाने की आवश्यकता नहीं।

इसी तरह जो उत्तम विद्या से युक्त है उसे अन्य किसी धन की आवश्यकता नहीं। अपने अच्चे कर्मों द्वारा अर्जित यश ही व्यक्ति को अमर बनाता है इसके विपरीत यशविहीन व्यक्ति संसार से विदा होने से पहले ही मर चुका होता है।

बिना सोचे समझे, आगे पीछे का विचार किये बिना खर्चने वाला व्यक्ति, बात बात पर निरर्थक झगड़ा करने वाला और सभी कार्यों में आतुर व्यक्ति थोड़े समय बाद ही मुश्किल में आ जाता है।

किसी दूसरे का हक कभी भी छीनने की कोशिश न करें क्योंकि अन्याय से अर्जित संपत्ति केवल दस वर्ष के लिये इहरती है, यानी कि देस सवेर आदमी का दुख का कारण बन जाती है और अन्त में उसके हाथ से निकल जाती है।

आगे चाणक्य कहते हैं कि विद्या, तप, दान, चरित्र, कर्तव्य से वहीन व्यक्ति पृथ्वी पर भार है। वह मानव नहीं पशु समान है।

While loneliness can be unpleasant and sometimes even painful, aloneness can be mindful, alive and boundlessly joyful.

Saints in pursuit of solitude preferred being alone as they found immense pleasure in their connection with God. The Buddha deprived himself of sensory input, bodily necessities and external desires, including social interaction, to attain enlightenment. Great thinkers have championed the intellectual and spiritual benefits of solitude. In a state of aloneness, they utilised the silence to be alone with God, listening to His will. Silence and solitude in aloneness are spaces inhabited by God.



Being alone in silence is the higher state of meditation; it can be healthy for the mind, allowing it to lift us out of problems. Being alone in meditation has a powerful function to rest life's disorder and chaos and awaken inner peace. It is a crucial turning point for Self-realisation, an ingredient of creativity. As one mystic poet had said, "In aloneness, I turned my gaze from outside to inside, fixed it on the hidden Self, took this to heart and naked I set forth to dance."

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

CAPT ASHWIN VERMA



अशवनी वर्मा ने 50 NGO परिवारों को दस
किलो आटे की थैली भेंट की

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निर्माण के 63 वर्ष

गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaligar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



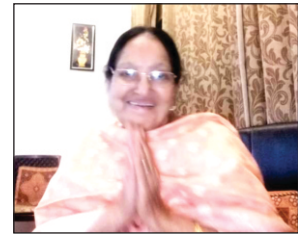
ANU MAHAJAN



DHARAMBIR SALWAN



KRISHNA CHAUDHARY



MADHURI MUNJAL



SURESH GUPTA



SHASHI ARYA



VIVEK ARORA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children



DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972
FOR BETTER HOMES











IS : 12701



Water Storage Tanks
Diplast Water Storage Tanks

IS : 4985



PVC Pressure Pipes
Diplast PVC Pressure Pipes

IS : 9537



PVC Electrical Conduits
Diplast PVC Electrical Conduits

IS : 13592



PVC SWR Pipes
Diplast PVC SWR Pipes

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting

Contact : 9041655102

DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)
Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870**